



माध्यमिक स्तर पर सामान्य शिक्षा के साथ व्यावसायिक शिक्षा के एकीकरण को बढ़ावा देने हेतु शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के अनुसार पाठ्यक्रम में सुधार की संभावनाओं का अध्ययन

पुष्पेन्द्र कुमार

शोधार्थी, शिक्षा संकाय, संस्कृति विश्वविद्यालय
मथुरा, उत्तर प्रदेश

डॉ रैनु गुप्ता

डीन, शिक्षा संकाय, संस्कृति विश्वविद्यालय
मथुरा, उत्तर प्रदेश

सारांश

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य माध्यमिक स्तर पर सामान्य एवं व्यावसायिक शिक्षा के प्रभावी एकीकरण को सुदृढ़ बनाने हेतु पाठ्यक्रम सुधार की संभावनाओं के संबंध में शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के दृष्टिकोण का विश्लेषण करना है। अध्ययन में वर्णनात्मक सर्वेक्षण पद्धति का प्रयोग किया गया। 100 शिक्षकों एवं 100 विद्यार्थियों से पृथक प्रश्नावलियों के माध्यम से आँकड़े संकलित किए गए। आँकड़ों का विश्लेषण आवृत्ति, प्रतिशत, औसत (Mean), मानक विचलन (SD) तथा तुलनात्मक परीक्षण (CR) के आधार पर किया गया। परिणामों से ज्ञात हुआ कि दोनों समूह पाठ्यक्रम सुधार के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति रखते हैं। निष्कर्ष राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के उद्देश्यों के अनुरूप पाए गए।

मुख्य शब्द: पाठ्यक्रम सुधार, व्यावसायिक शिक्षा, सामान्य शिक्षा, शिक्षक अभिवृत्ति, विद्यार्थी अभिवृत्ति, शैक्षिक एकीकरण

प्रस्तावना

समकालीन शिक्षा व्यवस्था में यह अनुभव किया जा रहा है कि केवल सैद्धांतिक ज्ञान विद्यार्थियों को रोजगारोन्मुख बनाने के लिए पर्याप्त नहीं है। माध्यमिक स्तर पर सामान्य शिक्षा के साथ व्यावसायिक शिक्षा का एकीकरण विद्यार्थियों के कौशल विकास, आत्मनिर्भरता तथा व्यावहारिक दक्षताओं को विकसित करने का सशक्त माध्यम है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में विद्यालयी स्तर पर कौशल-आधारित शिक्षा, अनुभवात्मक अधिगम तथा विषय चयन में लचीलापन प्रदान करने पर बल दिया गया है। इस संदर्भ में शिक्षकों एवं विद्यार्थियों दोनों के दृष्टिकोण का अध्ययन अत्यंत आवश्यक है, क्योंकि पाठ्यक्रम सुधार की सफलता इन्हीं दो प्रमुख हितधारकों पर निर्भर करती है।

2. अध्ययन के उद्देश्य

1. पाठ्यक्रम सुधार की संभावनाओं के प्रति विद्यार्थियों की अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
2. पाठ्यक्रम सुधार के प्रति शिक्षकों की अभिवृत्ति का विश्लेषण करना।
3. दोनों समूहों के दृष्टिकोण का तुलनात्मक अध्ययन करना।

3. अनुसंधान पद्धति

3.1. अनुसंधान रूपरेखा

प्रस्तुत अध्ययन में माध्यमिक स्तर पर सामान्य शिक्षा एवं व्यावसायिक शिक्षा के एकीकरण को सुदृढ़ बनाने हेतु पाठ्यक्रम सुधार की संभावनाओं के संबंध में शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के दृष्टिकोण का अध्ययन करने के लिए वर्णनात्मक सर्वेक्षण पद्धति का प्रयोग किया गया। यह पद्धति उत्तरदाताओं की अभिवृत्तियों एवं विचारों का व्यवस्थित अध्ययन करने के लिए उपयुक्त मानी जाती है।

3.2. नमूना

अध्ययन के लिए कुल **200 उत्तरदाताओं** का चयन किया गया, जिनमें निम्नलिखित दो समूह सम्मिलित थे

- 100 माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी
- 100 माध्यमिक स्तर के शिक्षक

3.3 उपकरण

शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के लिए पृथक संरचित प्रश्नावलियों का निर्माण किया गया।

3.4. सांख्यिकीय तकनीक

- आवृत्ति (f)
- प्रतिशत (%)
- औसत (Mean)
- मानक विचलन (SD)

4. परिणाम

तालिका: सामान्य शिक्षा के साथ व्यावसायिक शिक्षा के एकीकरण को बढ़ावा देने हेतु पाठ्यक्रम में सुधार की संभावनाओं के प्रति शिक्षकों की प्रतिक्रियाएँ

प्रतिक्रिया श्रेणी	आवृत्ति (f)	प्रतिशत (%)	औसत स्कोर	SD
पूर्णतः सहमत	38	38.0	3.95	0.98
सहमत	34	34.0		
न तो सहमत, न असहमत	16	16.0		
असहमत	9	9.0		
पूर्णतः असहमत	3	3.0		
कुल	100	100		

प्रस्तुत तालिका संख्या के आधार पर माध्यमिक स्तर पर सामान्य शिक्षा के साथ व्यावसायिक शिक्षा के एकीकरण को सुदृढ़ बनाने के उद्देश्य से पाठ्यक्रम में संभावित सुधारों के प्रति शिक्षकों की अभिवृत्तियों का विश्लेषण किया गया है। इस विश्लेषण का प्रमुख उद्देश्य यह समझना है कि शिक्षक समुदाय पाठ्यक्रम में प्रस्तावित संशोधनों को किस सीमा तक आवश्यक, उपयोगी एवं व्यावहारिक मानता है, ताकि सामान्य एवं व्यावसायिक शिक्षा का प्रभावी समन्वय सुनिश्चित किया जा सके। शिक्षकों की प्रतिक्रियाओं का अध्ययन आवृत्ति, प्रतिशत, औसत स्कोर (Mean) तथा मानक विचलन (SD) के आधार पर किया गया, जिससे उनके दृष्टिकोण की प्रकृति एवं प्रवृत्ति का वस्तुनिष्ठ आकलन संभव हो सका।

तालिका के निष्कर्षों से स्पष्ट है कि कुल 100 शिक्षकों में से 38% ने "पूर्णतः सहमत" तथा 34% ने "सहमत" विकल्प का चयन किया। इस प्रकार 76% शिक्षक पाठ्यक्रम सुधार की आवश्यकता को स्वीकार करते हैं। यह स्थिति इस तथ्य की ओर संकेत करती है कि अधिकांश शिक्षक पाठ्यक्रम में संशोधन को न केवल आवश्यक, बल्कि व्यावहारिक दृष्टि से भी सार्थक मानते हैं। इससे यह भी परिलक्षित होता है कि शिक्षक वर्तमान पाठ्यक्रम की सीमाओं से अवगत हैं और यह अनुभव करते हैं कि मात्र सैद्धांतिक ज्ञान विद्यार्थियों को रोजगारपरक बनाने के लिए पर्याप्त नहीं है।

शिक्षकों द्वारा पाठ्यक्रम में प्रयोगात्मक गतिविधियों, कौशल-आधारित मॉड्यूल, उद्योग-संबद्ध अधिगम अनुभवों तथा विषय चयन में लचीलापन सम्मिलित करने पर बल दिया जाना इस बात का प्रमाण है कि वे शिक्षा को अधिक व्यवहारिक, कौशल-उन्मुख एवं बाज़ार की आवश्यकताओं के अनुरूप बनाने के समर्थक हैं।

यद्यपि अधिकांश शिक्षक सकारात्मक दृष्टिकोण रखते हैं, तथापि 16% शिक्षकों ने तटस्थ प्रतिक्रिया दी तथा 12% (असहमत एवं पूर्णतः असहमत) ने पाठ्यक्रम सुधार के प्रति असहमति व्यक्त की। यह इंगित करता है कि सुधार के प्रति समर्थन होने के बावजूद कुछ व्यावहारिक बाधाएँ विद्यमान हैं। इन बाधाओं में विद्यालयों में पर्याप्त संसाधनों का अभाव, प्रशिक्षित शिक्षकों की कमी, उद्योग-विद्यालय समन्वय की सीमाएँ तथा व्यावसायिक विषयों के लिए आवश्यक अवसंरचना की अनुपलब्धता प्रमुख हो सकती हैं।

औसत स्कोर (Mean = 3.95) यह दर्शाता है कि समग्र रूप से शिक्षकों की अभिवृत्ति उच्च स्तर पर सकारात्मक है। साथ ही, मानक विचलन (SD = 0.98) अपेक्षाकृत कम होने के कारण यह स्पष्ट होता है कि शिक्षकों की प्रतिक्रियाओं में अत्यधिक भिन्नता नहीं है, अर्थात् अधिकांश शिक्षक इस विषय पर लगभग समान मत रखते हैं। यह स्थिति नीति-निर्माताओं एवं पाठ्यक्रम नियोजकों के लिए एक सुदृढ़ आधार प्रदान करती है।

शिक्षकों की अभिवृत्ति से संबंधित विभिन्न शोध अध्ययनों में भी यह प्रतिपादित किया गया है कि सामान्य एवं व्यावसायिक शिक्षा के प्रभावी एकीकरण के लिए पाठ्यक्रम में संरचनात्मक तथा विषयवस्तु संबंधी परिवर्तन अनिवार्य हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के परिप्रेक्ष्य में सिंह एवं वर्मा (2021) ने अपने अध्ययन में यह निष्कर्ष प्रस्तुत किया कि शिक्षक पाठ्यक्रम सुधार को शैक्षिक गुणवत्ता संवर्धन का महत्वपूर्ण साधन मानते हैं। उनके अनुसार, यदि पाठ्यक्रम को कौशल-आधारित तथा स्थानीय आवश्यकताओं के अनुरूप रूपांतरित किया जाए, तो सामान्य एवं व्यावसायिक शिक्षा का एकीकरण अधिक प्रभावी सिद्ध हो सकता है।

इसी प्रकार मिश्रा (2019) ने प्रतिपादित किया कि व्यावसायिक शिक्षा तभी सार्थक सिद्ध होती है जब उसे सामान्य शिक्षा के साथ समेकित रूप से प्रस्तुत किया जाए तथा पाठ्यक्रम में पर्याप्त लचीलापन उपलब्ध कराया जाए। उन्होंने यह भी इंगित किया कि प्रशिक्षित शिक्षकों की उपलब्धता एवं पाठ्यक्रम की प्रासंगिकता शिक्षकों की अभिवृत्ति को प्रभावित करने वाले महत्वपूर्ण कारक हैं।

शर्मा एवं अग्रवाल (2017) के अध्ययन में यह पाया गया कि माध्यमिक स्तर के अधिकांश शिक्षक वर्तमान पाठ्यक्रम को अत्यधिक सैद्धांतिक मानते हैं और उसमें व्यावहारिक एवं कौशल-आधारित तत्वों की कमी अनुभव करते हैं। उनके अनुसार, पाठ्यक्रम में परियोजना-आधारित कार्य, प्रयोगात्मक अधिगम तथा उद्योग-संपर्कित विषयों को सम्मिलित करने से विद्यार्थियों की रोजगारोन्मुख दक्षताओं का विकास संभव है।

अतः उपर्युक्त विश्लेषण एवं पूर्ववर्ती अध्ययनों के आलोक में यह कहा जा सकता है कि प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्ष शिक्षकों की सकारात्मक अभिवृत्ति की पुष्टि करते हैं तथा यह दर्शाते हैं कि पाठ्यक्रम सुधार सामान्य एवं व्यावसायिक शिक्षा के प्रभावी एकीकरण के लिए एक अनिवार्य एवं व्यवहारिक कदम है।

विद्यार्थियों के अनुसार माध्यमिक स्तर पर सामान्य शिक्षा के साथ व्यावसायिक शिक्षा के एकीकरण को बढ़ावा देने हेतु पाठ्यक्रम में सुधार की संभावनाओं का अध्ययन

उक्त तालिका के माध्यम से माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों द्वारा सामान्य शिक्षा के साथ व्यावसायिक शिक्षा के एकीकरण को सुदृढ़ करने हेतु पाठ्यक्रम में संभावित सुधारों के प्रति व्यक्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। इस तालिका का मुख्य उद्देश्य यह निर्धारित करना है कि विद्यार्थी पाठ्यक्रम में प्रस्तावित परिवर्तनों को कितनी सीमा तक आवश्यक, लाभकारी एवं व्यावहारिक मानते हैं। विद्यार्थियों की प्रतिक्रियाओं का परीक्षण आवृत्ति, प्रतिशत, औसत मान तथा मानक

विचलन जैसे सांख्यिकीय मानकों के आधार पर किया गया है, जिससे उनके दृष्टिकोण की प्रकृति, प्रवृत्ति तथा एकरूपता का स्पष्ट आकलन किया जा सके।

तालिका :सामान्य शिक्षा के साथ व्यावसायिक शिक्षा के एकीकरण को बढ़ावा देने हेतु पाठ्यक्रम में सुधार की संभावनाओं के प्रति विद्यार्थियों की प्रतिक्रियाएँ

प्रतिक्रिया श्रेणी	आवृत्ति (f)	प्रतिशत (%)	औसत स्कोर	मानक विचलन
पूर्णतः सहमत	72	36.0	3.89	0.97
सहमत	68	34.0		
न तो सहमत, न असहमत	34	17.0		
असहमत	18	9.0		
पूर्णतः असहमत	8	4.0		
कुल	200	100		

उपरोक्त तालिका के अवलोकन विद्यार्थियों के दृष्टिकोण को स्पष्ट करता है, जिससे यह ज्ञात होता है कि विद्यार्थी पाठ्यक्रम सुधार के माध्यम से सामान्य शिक्षा एवं व्यावसायिक शिक्षा के एकीकरण को सकारात्मक रूप से स्वीकार करते हैं। कुल 200 विद्यार्थियों में से 36% पूर्णतः सहमत तथा 34% सहमत हैं, अर्थात् 70% विद्यार्थी इस मत के पक्षधर हैं कि पाठ्यक्रम में अपेक्षित सुधार उनके कैरियर अवसरों का विस्तार कर सकते हैं।

विद्यार्थियों द्वारा व्यक्त यह अनुकूल दृष्टिकोण इस तथ्य को रेखांकित करता है कि वर्तमान समय के विद्यार्थी शिक्षा को केवल परीक्षा उत्तीर्ण करने का माध्यम नहीं मानते, बल्कि उसे रोजगार, स्वरोजगार एवं कौशल विकास से सीधे तौर पर संबद्ध करते हैं। उन्होंने विशेष रूप से व्यावहारिक प्रशिक्षण, कौशल-आधारित विषयों, उद्योग से जुड़े पाठ्यक्रम, इंटरशिप तथा ऑन-द-जॉब प्रशिक्षण जैसे तत्वों को पाठ्यक्रम में सम्मिलित किए जाने की आवश्यकता पर बल दिया, जो कि National Education Policy 2020 की मूल भावना के अनुरूप है।

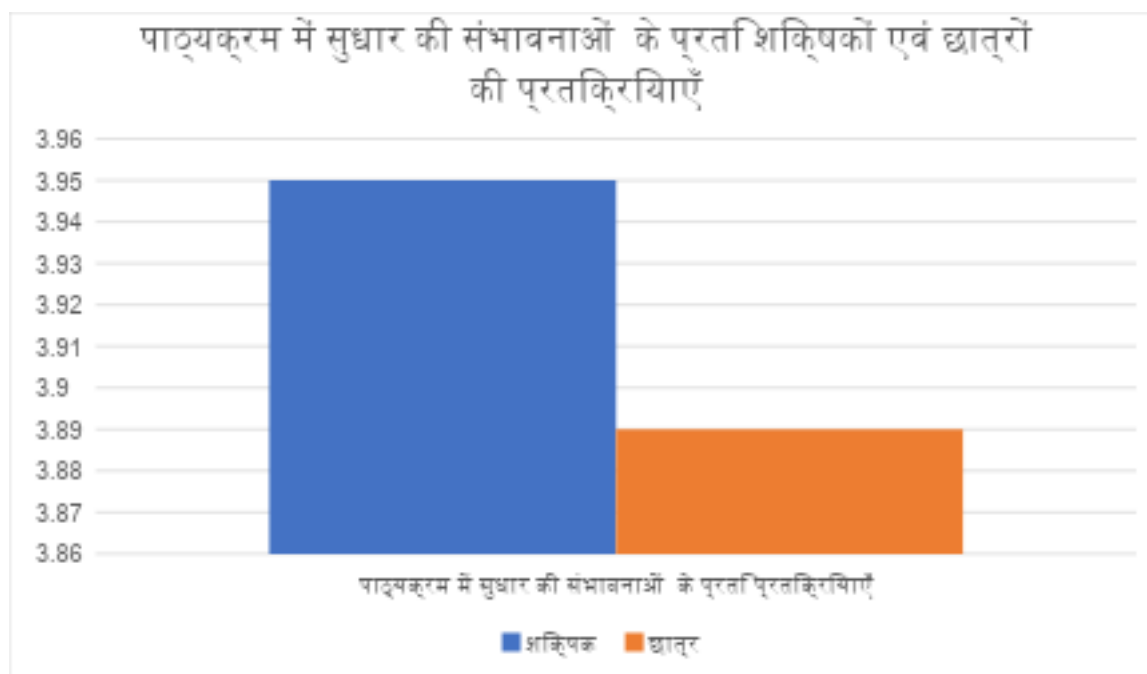
यद्यपि 17% विद्यार्थी तटस्थ तथा 13% असहमत पाए गए। यह संकेत करता है कि कुछ विद्यार्थियों में व्यावसायिक शिक्षा के संबंध में पर्याप्त जानकारी का अभाव, सामाजिक प्रतिष्ठा से जुड़ी भ्रांतियाँ, विद्यालयों में सीमित संसाधन अथवा भविष्य की अनिश्चितता जैसी परिस्थितियाँ उनके मन में संदेह उत्पन्न करती हैं।

औसत स्कोर (Mean = 3.89) विद्यार्थियों के समग्र सकारात्मक दृष्टिकोण को दर्शाता है, हालांकि यह शिक्षकों की अपेक्षा थोड़ा कम है। मानक विचलन (SD = 0.97) से स्पष्ट होता है कि प्रतिक्रियाओं में अधिक विविधता नहीं है तथा अधिकांश विद्यार्थियों की प्रवृत्ति समान दिशा में है।

विद्यार्थी दृष्टिकोण पर आधारित विभिन्न शोधों से भी यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि आज के विद्यार्थी शिक्षा को केवल अकादमिक उपलब्धि तक सीमित नहीं रखते, बल्कि उसे अपने भविष्य के रोजगार एवं स्वरोजगार से जोड़कर देखते हैं।

अंतरराष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में, UNESCO (2020) की रिपोर्ट में उल्लेखित है कि सामान्य एवं व्यावसायिक शिक्षा के समन्वय से विद्यार्थियों में कौशल विकास, आत्मनिर्भरता तथा कार्यकुशलता में वृद्धि होती है। रिपोर्ट के अनुसार, पाठ्यक्रम में व्यावहारिक अनुभवों को सम्मिलित करने से विद्यार्थियों की अधिगम-संलग्नता में उल्लेखनीय वृद्धि होती है। इसी प्रकार, यादव (2020) के अध्ययन में पाया गया कि व्यावसायिक शिक्षा के प्रति विद्यार्थियों की अभिवृत्ति पाठ्यक्रम की संरचना, विद्यालयीय सुविधाओं तथा समाज में उसकी छवि से प्रभावित होती है। अध्ययन यह भी दर्शाता है कि जब पाठ्यक्रम को अधिक रोजगारोन्मुख एवं व्यावहारिक बनाया जाता है, तो विद्यार्थियों का दृष्टिकोण अधिक सकारात्मक हो जाता है।

कुमार (2018) के शोध में यह निष्कर्ष सामने आया कि माध्यमिक स्तर के अधिकांश विद्यार्थी व्यावसायिक शिक्षा को तभी सार्थक मानते हैं, जब वह पाठ्यक्रम का अभिन्न एवं संगठित भाग हो। अध्ययन में यह भी स्पष्ट हुआ कि कौशल-आधारित विषय, व्यावहारिक प्रशिक्षण तथा इंटरशिप विद्यार्थियों की रुचि एवं सहभागिता बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।



आरेख : पाठ्यक्रम में सुधार की संभावनाओं के प्रति शिक्षकों एवं छात्रों की प्रतिक्रियाएँ

तालिका के औसत स्कोर के आधार पर निर्मित संयुक्त तुलनात्मक बार-आरेख से यह स्पष्ट होता है कि माध्यमिक स्तर पर सामान्य शिक्षा के साथ व्यावसायिक शिक्षा के एकीकरण को बढ़ावा देने हेतु पाठ्यक्रम में सुधार की संभावनाओं के प्रति शिक्षकों तथा विद्यार्थियों—दोनों का दृष्टिकोण सकारात्मक है। बार-आरेख में शिक्षकों का औसत स्कोर (Mean = 3.95) विद्यार्थियों के औसत स्कोर (Mean = 3.89) की तुलना में थोड़ा अधिक पाया गया है।

यह अंतर यह संकेत करता है कि शिक्षक पाठ्यक्रम सुधार की आवश्यकता को अधिक स्पष्ट एवं व्यावहारिक रूप में अनुभव करते हैं, जबकि विद्यार्थी भी इसे अपने भविष्य के रोजगार एवं कैरियर अवसरों से जोड़कर देखते हैं। दोनों वर्गों के औसत स्कोर अपेक्षाकृत उच्च स्तर पर स्थित हैं, जिससे यह स्पष्ट होता है कि पाठ्यक्रम में सुधार को सामान्य एवं व्यावसायिक शिक्षा के प्रभावी एकीकरण के लिए एक आवश्यक पहल के रूप में स्वीकार किया जा रहा है।

अतः संयुक्त तुलनात्मक बार-आरेख के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि पाठ्यक्रम सुधार के प्रति शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के दृष्टिकोण में मूलतः समानता है तथा दोनों ही वर्ग सामान्य शिक्षा के साथ व्यावसायिक शिक्षा के सुदृढ़ एकीकरण के पक्ष में हैं। यह प्रवृत्ति राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की उस भावना के अनुरूप है, जिसमें कौशल-आधारित, रोजगारोन्मुख एवं व्यावहारिक शिक्षा पर विशेष बल दिया गया है।

5. तुलनात्मक विश्लेषण

1. दोनों समूहों में पाठ्यक्रम सुधार के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण पाया गया।
2. विद्यार्थियों ने अधिक व्यावहारिक एवं रोजगारोन्मुख विषयों की आवश्यकता पर बल दिया।
3. शिक्षकों ने पाठ्यक्रम में संरचनात्मक सुधार, उद्योग-विद्यालय सहयोग एवं प्रशिक्षित संसाधनों की उपलब्धता को आवश्यक बताया।

यह स्पष्ट करता है कि पाठ्यक्रम सुधार की आवश्यकता को शिक्षक एवं विद्यार्थी दोनों स्वीकार करते हैं।

6. चर्चा

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर UNESCO (2020) ने यह रेखांकित किया कि कौशल-आधारित शिक्षा का समावेशन विद्यार्थियों की रोजगार क्षमता एवं लैंगिक समानता को प्रोत्साहित करता है।

राष्ट्रीय स्तर पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 विद्यालयी पाठ्यक्रम में व्यावसायिक शिक्षा के समेकन को अनिवार्य दिशा में अग्रसर करती है।

प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्ष इन नीतिगत एवं शोध-आधारित दृष्टिकोणों की पुष्टि करते हैं।

7. निहितार्थ

1. पाठ्यक्रम में कौशल-आधारित एवं दक्षता-उन्मुख घटकों को सम्मिलित किया जाए।
2. विषय चयन में लचीलापन प्रदान किया जाए।
3. उद्योग-विद्यालय सहयोग को सुदृढ़ किया जाए।
4. शिक्षकों को व्यावसायिक उन्मुख प्रशिक्षण प्रदान किया जाए।
5. आवश्यक अवसंरचना एवं संसाधनों की उपलब्धता सुनिश्चित की जाए।

8. निष्कर्ष

अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि माध्यमिक स्तर पर सामान्य एवं व्यावसायिक शिक्षा के एकीकरण को बढ़ावा देने हेतु पाठ्यक्रम सुधार की संभावनाओं के प्रति शिक्षकों एवं विद्यार्थियों दोनों की अभिवृत्ति सकारात्मक है। दोनों समूह इस तथ्य से सहमत हैं कि वर्तमान पाठ्यक्रम में व्यावहारिक, कौशल-आधारित एवं रोजगारोन्मुख घटकों को सम्मिलित करना आवश्यक है।

अतः यह कहा जा सकता है कि पाठ्यक्रम सुधार की दिशा में उठाए गए कदम न केवल नीति-संगत होंगे, बल्कि हितधारकों की अपेक्षाओं के अनुरूप भी होंगे।

References

- OECD. (2023). *Education at a glance 2023: OECD indicators*. OECD Publishing. <https://doi.org/10.1787/e13bef63-en>
- UNESCO. (2022). *Transforming technical and vocational education and training for successful and just transitions*. UNESCO Publishing.
- World Bank. (2022). *Skills development in secondary education: Preparing youth for the future of work*. World Bank Publications.
- Ministry of Education, Government of India. (2020). *National Education Policy 2020*. Government of India.
- UNESCO. (2020). *Global education monitoring report 2020: Inclusion and education—All means all*. UNESCO Publishing.
- OECD. (2019). *Getting skills right: Future-ready adult learning systems*. OECD Publishing.
- King, K. (2012). *Education and skills development in the global economy*. Routledge.
- Tilak, J. B. G. (2018). Vocational education and training in Asia. In S. Billett, C. Harteis, & H. Gruber (Eds.), *International handbook of vocational education and training* (pp. 1–22). Springer.
- UNESCO-UNEVOC. (2017). *Greening technical and vocational education and training: A practical guide for institutions*. UNESCO-UNEVOC International Centre.
- Kumar, S. (2018). Integration of vocational education at secondary level: A study of students' perception and career orientation. *Journal of Educational Studies*, 16(1), 78–86.